Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 9, September - 2024

DOIs:10.2018/SS/202409010 --:-- Research Paper / Article / Review

महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का अध्ययन

[1] डॉ0 शिव स्वरूप शर्मा, [2] पूनम यादव,
[1] 'विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश
Email - shivss164@gmail.com
[2] शोधकत्री

सारांश: प्रस्तुत शोध अध्ययन में महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में लिंग, निवास स्थान एवं संस्थान के आधार पर अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु बरेली मण्डल के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों के 200 शिक्षकों का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु डॉ0 नखत नसरीन एवं श्रीमती0 सारिका शर्मा द्वारा निर्मित जीवन गुणवत्ता मापनी का उपयोग किया गया है।

मूलशब्दः महाविद्यालय, शिक्षक, जीवन गुणवत्ता ।

1. प्रस्तावना :

देश के लोकतन्त्र को सक्रिय रखने के लिए तथ्यों की जानकारी नहीं बल्कि बेहतर शिक्षा का होना आवश्यक है। शिक्षा समाज, राष्ट्र और विश्व की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। सभ्य समाज का निर्माण शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न होता है। शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मनुष्य के मस्तिष्क के अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है। बालक के प्रारम्भिक विकास के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण सोपान है। बालक माँ की गोद से निकल कर एक पवित्र एवं सभ्य नागरिक बनाने का जीवन का अध्याय आरम्भ करता है।

उच्च शिक्षा का अर्थ सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विशद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी, महाविद्यालयों लिबरल आर्ट कॉलेजो एवं प्राद्यौगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है।

प्रत्येक मनुष्य में जन्मजात कुछ गुण होते है जो उसके जीवन को सन्तुष्ट करते है उन्हीं गुणों को जीवन गुणवत्ता कहते है। शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण मानव संसाधनों में से एक है किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों पर निर्भर करती है। किसी भी शैक्षिक प्रणाली की ताकत और गुणवत्ता काफी हद तक उसके शिक्षक के काम पर निर्भर करती है। यह अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है कि शिक्षण दुनिया के सबसे तनावपूर्ण व्यवसाय में एक है। शिक्षक अपने कैरियर की कुछ ऐसी विशेषताओं को समझते है जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ईरान में शिक्षक प्रणाली में हालांकि यह बदलाव हुए है। पिछले दशक में कई सुधारों और नवाचारों के बावजूद ईरानी शिक्षक अभी भी तनावपूर्ण कामकाजी परिस्थितियों से पीड़ित है। अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षकों में चिन्ता, उच्च रक्तचाप, सिर दर्द मनोदैहिक जैसे विकार उत्पन्न होते है। कई अध्ययनों से पता चला है कि अत्यधिक तनाव का शिक्षकों की शारीरिक और मानसिक स्थिति पर स्पष्ट प्रभाव पड़ सकता है। यह बताया गया है कि शिक्षकों में जीवन की निम्न गुणवत्ता स्तर और कम जीवन प्रत्याशा होती है। स्कूलों शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता स्तर का मूल्यांकन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनकी जीवन की गुणवत्ता स्तर न केवल उन्हें प्रभावित करता है बल्कि छात्रों के प्रदर्शन और शिक्षकों द्वारा शैक्षिक समयोजन में

जिम्मेदारियाँ को संभालने के तरीके को भी प्रभावित करता है। अच्छे छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए स्कूल के शिक्षकों का जीवन स्तर अच्छा होना चाहिए। शिक्षकों के जीवन की गुणवत्ता स्तर में कोई भी समस्या या दोष उनके व्यावसायिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

मानव व्यवहार, कला, शिल्प, शिक्षा मनोविज्ञान, मानविकी सम्बन्धित क्षेत्रों के आदान-प्रदान के माध्यम जीवन की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए बढ़ावा देने के लिए दिया जाना सम्भव है। वैश्विक और मानव कल्याण की भलाई के लिए विज्ञान प्रौद्योगिकी चिकित्सा और स्वास्थ्य विषय जैसे सामान्य रूप से सभी पहलुओं को जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करने में साझेदारी, विनियम करने और इसे बढ़ावा देने की अत्यन्त आवश्यकता महसूस की जा रही है।

'शिक्षक के उद्देश्य' नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में (प्रोफेसर हवाईडेड) विश्वविद्यालयों का राष्ट्र निर्माण में योगदान के सन्दर्भ में लिखा गया है। विश्वविद्यालयों से हमारी सभ्यता के बौद्धिक मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित किया जाता है। यही से विधिज्ञ, राजनीतिविद, चिकित्सा वैज्ञानिक एवं प्राध्यापक निकले है।

उच्च शिक्षा जो राष्ट्र की आधार शिला होती है। उसमें गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण सवाल है। गुणवत्ता और शिक्षक उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलू है। गुणवत्ता के बिना शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पाएगी यह कहना शायद बहुत आसान नहीं होगा।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास बिना दक्ष शिक्षक के संभव नहीं है। दक्ष शिक्षक ही शिक्षण कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं। वर्ग मंे विभिन्न तरह के छात्र रहते हैं। उन छात्रांे को समझने की क्षमता अलग-अलग होती है। कुछ छात्र बहुत जल्दी समझ लेते हैं कुछ छात्र देरी से समझते हैं। दक्ष शिक्षक कुशलतापूर्वक सभी छात्रांे मंे विषय वस्तु के प्रति रूचि उत्पन्न करते हैं तथा उनकी समझ को बढ़ाते हैं। शिक्षक पढ़ाने के विभिन्न तरीकांे को शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय मंे सीखते हैं। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विकास मंे शिक्षकांे की शिक्षण दक्षता आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

ऐसे शिक्षक जिनके ऊपर भारत का अतीत निर्भर रहा है और आगे भी जिनके ऊपर भारत का भविष्य निर्भर है, जो भारत के भविष्य के कर्णधारांे के निर्माता है, समाज को जिनसे बहुत सारी अपेक्षाएं हैं, ऐसे शिक्षकांे की गरिमा, मान-सम्मान और आदर समाज में बना रहे इसके लिए समाज तथा सरकार को विद्यालयों मंे उन्हीं शिक्षकांे का चयन करना होगा जो बहुत ही विद्वान, कर्मठ, उच्च शिक्षण अभियोग्यता, सृजनात्मकता, आत्मसंप्रत्यय तथा सकारात्मक अभिवृत्ति वाले हांे। (कुमारी, 2019)

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का स्तर क्या है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन का अनुभव किया और इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की योजना बनायी, सीमित साधनों एवं समय के अभाव के कारण इस अध्ययन को विस्तृत रूप प्रदान नहीं किया जा सकेगा लेकिन परिकल्पनाओं के माध्यम से उनकी जीवन गुणवत्ता के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है।

3. समस्या कथन :

उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

उच्च शिक्षा स्तरः उच्च शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो उच्चतर माध्यमिक स्तर के बाद प्रदान की जाती है।

शिक्षकः एक आदर्श शिक्षक वहीं होता है जो अपने विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान कर एवं उनका मार्गदर्शन करके सर्वांगीण विकास करने में मुख्य भूमिका निभाता है।

जीवन गुणवत्ताः जीवन की गुणवत्ता व्यक्तियों और समाज का कल्याण है जो जीवन के सकारात्मक व नकारात्मक विशेषताओं शारीरिक स्वास्थ्य, परिवार, शिक्षा, रोजगार, धन एवं धार्मिक विश्वास को दर्शाती है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का अध्ययन करना।
- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता की तुलना करना।
- ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता की तुलना करना।
- सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता की तुलना करना।

5. अध्ययन की परिकल्पनायें

- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. अध्ययन का सीमांकन

- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध केवल बरेली मण्डल तक ही सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में केवल उच्च स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों को ही लिया गया है।
- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में केवल 200 शिक्षकों को ही न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

7. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

राना (2008) ने सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की जीवन गुणवत्त का अध्ययन पर शोध कार्य किया। अपने अध्ययन में 221 सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों चयन किया तथा उन्होंने अपने परिणाम में पाया कि जो शिक्षक गैर सरकारी थे उनमें सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा जीवन गुणवत्ता का स्तर अपेक्षाकृत कम थी।

एन्गाहर्ट (2009) ने अध्ययन में सरकारी एवं गैर सरकारी में कार्यरत् पुरूष एवं महिला शिक्षकों में कोई सार्थक नहीं देखा गया। अतः सरकारी एवं गैर सरकारी में कार्यरत् शिक्षकों में लिंग का उनकी जीवन गुणवत्ता पर कोई उच्च प्रभाव नहीं देखा गया।

रिचर्ड एवं द्विहिस्ट (2009) ने अपने अध्ययन में एक सार्थक अन्तर ज्ञात किया उन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि सरकारी एवं गैर सरकारी में कार्यरत् शिक्षकों में आयु के अनुसार उनमें कार्य संतुष्टि तथा जीवन गुणवत्ता में प्रभाव पड़ता है। अतः आयु शिक्षकों के कार्य और जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

8. अध्ययन की विधि :

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली मण्डल के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बरेली मण्डल के 20 महाविद्यालयों से 200 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन का उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में जीवन गुणवत्ता के मापन हेतु डॉ0 नखत नसरीन एवं श्रीमती0 सारिका शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा परीक्षण करने के लिए ऑकड़ों का संग्रह किया गया तथा तत्पश्चात् इसका मध्यमान, मानक विचलन, टी-अनुपात द्वारा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच की गयी।

9. निष्कर्ष

- आँकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 200 शिक्षकों में से 100(50ण्00ः) शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता उच्च स्तर की पायी गयी और 60(30ण्00ः) शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता माध्यम स्तर की थी जबकि 40(20ण्00ः) शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता निम्न स्तर की पायी गयी।
- प्रथम परिकल्पना "उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.75 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है।" उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत् पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- द्वितीय परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.80 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- तृतीय परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.65 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- चतुर्थ परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि ग्रामीण उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.59 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "ग्रामीण एवं शहरी उच्च शिक्षा स्तर के संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षकों के जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- पंचम परिकल्पना "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता

का मध्यमान तथा मानक विचलन सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.61 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

- षष्ठम् परिकल्पना "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.40 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
- सप्तम् परिकल्पना "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता का मध्यमान तथा मानक विचलन सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता के मध्यमान व मानक विचलन से अधिक है। टी-परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी-मान 1.76 आया, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान क्रमशः 1.98 तथा 2.63 से कम है। "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च शिक्षा स्तर के महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों की जीवन गुणवत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया है।" अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

10. शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षण संस्थान व प्रबन्धनः शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन में अध्यापकों की जीवन गुणवत्ता के लिए समय-समय पर कार्य सम्बन्धी बैठकों का आयोजन करवाने हेतु अवकाश कालीन समय को विद्यालय समय सारणी में शामिल करना चाहिए।
- शिक्षकः प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध शिक्षकों की विभिन्न विद्यालयी कार्यों से समायोजन करने हेतु प्रेरित कर सकेगा। शिक्षकों के सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकेगा, जिससे अध्यापक अपना कार्य उत्साहपूर्वक कर सकें।

11. सुझाव

- प्रस्तुत लघु अध्ययन केवल जनपदीय स्तर तक ही सीमित है भविष्य में इसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत लघु अध्ययन केवल उच्च शिक्षा स्तर तक ही सीमित है भविष्य में इसे प्राथमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत लघु अध्ययन में केवल 200 का न्यादर्श लिया गया है भविष्य में हम इसे बड़े न्यादर्श पर भी कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. कौल, लोकेश, शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0।
2. कपिल, एच0के0 (2009), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगराः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0।
3. गुप्ता, एस0पी0 (2014), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृ0 234-287।
4. गुप्ता, एस0पी0 (2011), अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
5. गैरेट, एच0ई0 एवं बुडवर्ग, आर0ए0 (1992), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, लुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स, पृ0 27-36।
6. मानव, आर0एन0 (2014), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
7. मायुर, एस0एस0 (1999), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक हाउस।